♦ When we compare with the growth in India's exports with that of these countries, we find that India's growth has been lower than many of these countries, like China, S. Korea etc. As a result, though India's share in world export has increased during the post liberalization period, the difference in India's share in world exports with these countries has increased.

♦ The overall satisfactory performance during 1992-93 to 2004-05; at aggregate as well as at disaggregate level, mostly owed to growth achieved in the first sub-period, i.e. from 1992-93 to 1996-97. Since then, however, growth rate in most of the sectors were lower than that of the first period.

NOTES AND REFERENCES

o Singh, Manmohan (1964) , India's Export Trends and the Prospects for Self sustained Growth, Clarendon Press, Oxford.

o Bhattacharya, B. and Prithiwi k. De, "Change in India's Export Composition in the Post Liberalization Era", Foreign Trade Review, 2001, pp.65-76.

o Chakraborty, D and P Chakraborty, "India's Exports in the Post WTO Phase: Some Exploratory Results and Future Concern." Foreign Trade Review, Vol.XL, no. 1, 2005, pp.3-26.

o Kaushik K. and Paras, Trade Liberalization and Export Performance in India: A Statistical Verification", Foreign Trade Review, 2001, pp.12-31.

शिक्षा तथा समाज का अन्योन्याश्रय संबंध : एक नवीन विवेचन

डॉ0 शशिबाला*

शिक्षा और समाज एक दूसरे के पूरक एवं परस्पर संबंधित है। वस्तुतः इनका संबंध पारस्परिक कारण और परिणाम का है क्योंकि जैसा समाज होता है वैसा ही शिक्षा होती है और जैसी शिक्षा होती है, वैसा ही समाज होता है।

बायड एच0 बोड का कथन है–''समाज और शिक्षा का एक–दूसरे से पारस्परिक कारणों और परिणाम का संबंध है। किसी भी समाज का स्वरूप उसकी शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप को निर्धारित करता है और इस व्यवस्था का स्वरूप समाज के स्वरूप को निर्धारित करता है।

शिक्षा और समाज की अन्योन्याश्रितता इस प्रकार देखी जा सकती है कि पहले प्राचीन समय में आदर्श एवं मूल्यों की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था जिससे प्रत्येक व्यक्ति आदर्श से युक्त होता था, परंतु आज जहां शिक्षा में विज्ञान एवं तकनीकी को महत्व दिया जाने लगा है जिससे नैतिक मूल्यों का स्थान गौण हो गया है। अतः समाज के व्यक्तियों में भी मूल्य विकसित होने की अपेक्षा प्रतिस्पर्धा, धन लोलुपता इत्यादि की भावनाएं बढ़ी है।

इसी प्रकार शिक्षा भी समाज पर निर्भर होती है। उदाहरणार्थ– भारतीय समाज में जनतंत्रीय आदर्शों को स्वीकार किया है।1 फलस्वरुप यहां की शिक्षा में भी यही प्रयास किया जाता है कि सब व्यक्तियों को बिना किसी भेदभाव के जनतंत्रीय आदर्शों एवं मूल्यों के अनुरूप शिक्षा प्रदान की जाए।

समाज, समाजशास्त्र तथा शैक्षिक समाजशास्त्र का शिक्षा से घनिष्ठ संबंध है।इसीलिए, प्रत्येक समाज अपनी आकांक्षाओं, आवश्यकताओं तथा आदर्शों को सामने रखते हुए शिक्षा की प्रक्रिया को इस प्रकार से नियोजित करता है कि वह अपने आदर्शों को प्राप्त कर लें तथा उसके सभी व्यक्ति उपयोगी सदस्य बन जाएं। यह महान् कार्य उसी समय पूरा हो सकता है जब समाज के सभी व्यक्ति उसके आदर्शों के अनुसार अपने व्यवहार में परिवर्तन करते हुए उसके साथ अनुकूलन कर सके। शिक्षा इस संबंध में सहायता कर सकती है। यही कारण है कि समय तथा परिस्थिति के अनुसार समाज यह निश्चित करता है कि व्यक्ति को किस प्रकार की

***यू0जी0सी0 नेट,एम.ए., एम.एड, शिक्षाशास्त्र विभाग, नालांदा खुला वि0वि0 पटना,**

शिक्षा दी जाए जिससे वह उपयोगी और श्रेष्ठ सदस्य बनकर समाज को सबल, सु.ढ़ तथा शक्तिशाली बना सके। स्पष्ट है समाज शिक्षा का महत्वपूर्ण साधन है। दूसरे शब्दों में, समाज अपनी आवश्यकताओं तथा आदर्शों के अनुसार शिक्षा के स्वरूप को निर्धारित करता है।

शिक्षा तथा समाज का अटूट संबंध है। हम देखते हैं कि जब भी किसी समाज ने शिक्षा की व्यवस्था की है उसने सबसे पहले अपनी आवश्यकताओं तथा आदर्शों को सामने रखा है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि जैसा समाज होगा वैसी ही शिक्षा होगी। दूसरे शब्दों में, जिस समाज में जैसे आदर्श होंगे वहां की शिक्षा भी उन्हीं आदर्शों के अनुरूप होगी।2 यही कारण है कि यदि किसी समाज के आदर्श किसी कारण से बदल जाते हैं तो वहां की शिक्षा भी बदले हुए आदर्शों के अनुसार तुरंत बदल जाती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि विभिन्न समाजों में समय–समय पर विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्रदान की गई और अब भी की जा रही है। यह बात कुछ उदाहरणों द्वारा स्पष्ट की जा रही है :–

प्राचीन एवं मध्यकालीन समाज–प्राचीन तथा मध्यकालीन समाज में धर्म का बोलबाला था।अतः शिक्षा भी धार्मिक थी। दूसरे शब्दों में,चूँकि प्राचीन तथा मध्यकालीन समाज धर्म प्रधान था, इसलिए उस समाज में धार्मिक सिद्धांतों का अनुसरण करते हुए व्यक्ति के धार्मिक तथा चारित्रिक विकास पर बल दिया जाता था।

आधुनिक समाज–आधुनिक समाज पर विज्ञान का विशेष प्रभाव है। अतः शिक्षा के द्वारा इस बात पर बल दिया जाता है कि व्यक्ति की चिंतन, तर्क और निर्णय आदि मानसिक शक्तियां पूर्णरूपेण विकसित हो जाएं। ध्यान देने की बात है कि वर्तमान समाज के विभिन्न रूप हैं।प्रत्येक समाज अपने–अपने सिद्धांतों तथा आदर्शों के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करता है। निम्नलिखित पंक्तियों में हम इस बात को स्पष्ट कर रहे हैं कि विभिन्न समाजों में शिक्षा का संबंध किस–किस रूप से दिखाई देता है।

आदर्शवादी समाज–आदर्शवादी समाज में विचार तथा बुद्धि को विशेष महत्व देते हुए आध्यात्मिक विकास के आदर्श को ध्यान में रखकर शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। अतः ऐसे समाज की षिक्षा में चरित्र गठन तथा नैतिक विकास पर बल दिया जाता है।

भौतिकवादी समाज–भौतिकवादी समाज में भौतिक संपन्नता को प्रमुख स्थान दिया जाता है। ऐसे समाज में नैतिक आदर्शों, आध्यात्मिक मूल्यों, रचनात्मक कार्यों तथा विवेक आदि के विकास को कोई स्थान न देते हुए शिक्षा की व्यवस्था केवल भौतिक सुखों की उन्नति के लिए की जाती है जिससे समाज धन्यधान्य से परिपूर्ण हो जाए।

प्रयोजनवादी समाज–प्रयोजनवादियों का विष्वास है कि सत्य सदैव देश, काल तथा परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। उसके अनुसार सत्य की कसौटी उसका पुनर्निरीक्षण है। अतः यदि कोई सत्य यदि किसी परिस्थिति में सत्य सिद्ध नहीं होता, तो वह असत्य है। चूँकि प्रयोजनवादियों के अनुसार सत्य परिवर्तनशील है, इसलिए प्रयोजनवादी समाज में विचार की अपेक्षा क्रिया तथा बुद्धि की अपेक्षा परिस्थिति को अधिक महत्व देते हुए शिक्षा की व्यवस्था नवीन मूल्यों के निर्माण हेतु की जाती है.

फासिस्ट समाज–फासिस्ट समाज में राज्य को मुख्य तथा व्यक्ति को गौण स्थान दिया जाता है। ऐसे समाज में व्यक्ति से आशा की जाती है कि वह राज्य के हित में अपने जीवन की आहुति देने में भी संकोच न करें। इस .ष्टि से ऐसे समाज में शिक्षा की व्यवस्था केवल ऐसे व्यक्तियों के लिए ही की जाती है जो अपने हित को त्याग कर समाज की सेवा करते रहे। ध्यान देने की बात है कि ऐसे समाज पर एक ही व्यक्ति अपने शक्ति के बल पर शासन करता है। हिटलर तथा मुसोलिनी ऐसे शासकों के उदाहरण है। अतः ऐसे समाज में जन–संधारण की अपेक्षा केवल प्रतिभाशाली व्यक्तियों को ही मान्यता दी जाती है और केवल प्रतिभाशाली बालकों को शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। दूसरे शब्दों में, फासिस्ट समाज के अंतर्गत प्रत्येक बालक को शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर नहीं मिलता। शासक को पूर्ण अधिकार होता है कि वह शिक्षा का स्वरूप अपनी इच्छानुसार जैसा चाहे वैसा निर्धारित करें। विरोध करने वालों को कठोर दंड अथवा मौत के घाट उतार दिया जाता है। इस प्रकार फासिस्ट समाज में शिक्षा बल तथा आदेश द्वारा प्रदान की जाती है। बालकों को छोटी–छोटीभूलों पर कड़े से कड़ा दंड दिया जाता है। गत वर्षो में जर्मनी, इटली जापान फासिस्ट थे। वहां पर शिक्षा की व्यवस्था उक्त सिद्धान्तों को दृष्टि में रखते हुए की जाती थी।

जनतंत्रवादी समाज–जनतंत्रवादी समाज में व्यक्ति के व्यक्तित्व को विशेष महत्व दिया जाता है। चूंकि जनतंत्र वह आदर्श है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को एक सुखी, संपन्न तथा समृद्धिशालीजीवन व्यतीत करने के समान अवसर प्राप्त होते हैं, इसलिए जनतंत्रवादी समाज में प्रत्येक व्यक्ति को चिंतन तथा मनन करने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है। प्रत्येक व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वह ऐसे कार्य करे जिनसे सबका भला हो। ऐसे समाज में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का आदर करता है तथा प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे के विकास में बाधक सिद्ध न होकर मेल–जोल के साथ रहते हुए कंधे से कंधा मिलाकर चलता है जिससे समाज दिन–प्रतिदिन उन्नति के शिखर पर चढ़ता रहे। स्पष्ट है जनतंत्रवादी समाज में प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता, सबके समान अधिकार तथा वैयक्तिक और सामूहिक जीवन में विश्वास

आदि आदर्श को प्राप्त करने के लिए शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार से की जाती है कि प्रत्येक बालक को उसकी रुचियों, रुझानों, योग्यताओं तथा क्षमताओं के अनुसार विकसित होने के लिए ऐसे अवसर मिलते रहे कि उसमें अच्छी आदतें, सामाजिक गुण, प्रेम, सद्भावना, सहयोग, सहनशीलता, सहानुभूति, आत्म–अनुषासन तथा कर्तव्यपरायणता आदि जनतांत्रिक गुणों का विकास हो जाए।5

इसी प्रकार शिक्षा यदि समाज के सदस्यों को उपयुक्त व्यवसायों का चयन करने में सहायता देती है, तो इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समाज विभिन्न प्रकार की व्यावसायिक संस्थाओं का संचालन करता है। प्रत्येक समाज की शिक्षा प्रणाली उसके आदर्शों आवष्यकताओं तथा आकांक्षाओं एवं विचारधाराओं के अनुसार होती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वास्तव में एक के बिना दूसरे का काम चलना कठिन है। समाज अपने हितों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शिक्षा के स्वरूप को निर्धारित करता है। शिक्षा समाज के पुराने विचारों का समर्थन कर उसकी नव निर्माण में सहायता देती है।

संदर्भ सूची :–

1. पाण्डेय, डॉ0 रामशकल, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2008, पृ0सं0–429.
2. सक्सेना, N.R स्वरूप, संजय कुमार, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, 2013,पृ0सं0–667.
3. तथैव, पृ0सं0–668
4. गुप्ता, डॉ0 अल्का, शिक्षाशास्त्र का आधार सामग्री, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2017, पृ0सं0–205.
5. सक्सेना, N.R स्वरूप, संजय कुमार, षिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, 2013,पृ0सं0–669.